P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-2* October- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अम्बेडकर नगर (उ0 प्र0) में कृषि विकास की समस्याएँ एंव उसका समाधान

Problems And Solutions to Agricultural Development In Ambedkar Nagar (U.P.)

Paper Submission: 15/10/2020, Date of Acceptance: 28/10/2020, Date of Publication: 29/10/2020

जगदेव
सहायक प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
सन्तगढ़िनाथ राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मोहम्मदाबाद, गोहना,
मऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

गणेश कुमार
शोध छात्र
भूगोल विभाग,
सन्तगढ़िनाथ राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मोहम्मदाबाद, गोहना,
मऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

हमारा देश भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ कृषि को देश की अर्थव्यवस्था का केन्द्र बिन्दु तथा भारतीय जीवन की धुरी माना जाता है आज भी देश की लगभग एक तिहाई जनसंख्या प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर करती है भारत के उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में अम्बेडकर नगर जिला जो कि घाघरा/सरयू एंव टोंस नदियों द्वारा निर्मित मैदानी भाग है। यह एक कृषि प्रधान क्षेत्र माना जाता है। अनुकूल भौगोलिक कारको की उपस्थिति के कारण यहाँ लगभग 75 % भूमि पर कृषि की जाती है जिसमें जिले के लगभग 60 % जनसख्या संलग्न है यहाँ कारण है कि कृषि को अम्बेडकर नगर जनपद के अर्थिक जीवन का आधार तथा रोजगार का प्रमुख स्त्रोत माना जाता है परन्तु कृषि की पुरातन विधियों, पूँजी की कमी, भूमि सुधार की कमी, विपणन एँव वित्त सम्बन्धी कठिनाईयों आदि समस्याओं के कारण अभी भी जिले में कृषि का समुचित विकास नही हो पाया है। आज जब पूरे विश्व ने एक मत हो यह स्वीकर कर लिया है। कि विकास दर बढाने का मूलमंत्र कृषि है और इसके विकास, समृद्धि और उत्पादकता पर ही किसी प्रदेश का विकास और सम्पन्नता निर्भर करती है। तो यह आवश्यक हो गया है कि कृषि विकास की बाधाओं को चिन्हित कर ठोस एँव प्रभावी नीतियों के कियान्वयन द्वारा उसका समाधान प्रस्तुत करें और कृषि को उन्नत बनाकर प्रदेश को विकास के मार्ग की ओर प्रशस्त करे। प्रस्तुत शोध निबन्ध का उद्देश्य जिले में कृषि विकास की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन कर, उसके समाधान क लिए उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना है, जिसे यथासंभव जिले में कृषि का विकास हो सके और अम्बेडकर नगर जनपद में उन्नत कृषि क्षेत्र मे एक आदर्श बन सके ।

Our country India is an agricultural country, where agriculture is considered to be the focal point of the country's economy and the axis of Indian life. Even today, about one third of the population of the country directly or indirectly depends on agriculture. In Ambedkar Nagar district which is the plains formed by the Ghaghra / Saryu and Tons rivers. It is considered to be an agricultural dominated area. Due to the presence of favorable geographical factors, agriculture is done here on about 75% of the land in which about 60% of the population of the district is engaged, here is the reason that agriculture is considered as the basis of economic life and major source of employment in Ambedkar Nagar district Due to problems of archaic methods, lack of capital, lack of land reforms, marketing and finance related problems etc., agriculture has not been developed properly in the district. Today, when the whole world has accepted one vote, it has been accepted. The key to increasing the growth rate is agriculture and the development and prosperity of a state depends on its development, prosperity and productivity. So it has become necessary that after identifying the barriers to agricultural development, by presenting concrete and effective policies and presenting solutions to it, and by upgrading agriculture, the state should be paved towards the path of development. The objective of the research essay presented is to study the various problems of agricultural development in the district, and to submit suitable suggestions for its solution, which can develop agriculture in the district as much as possible and become an ideal in the advanced agriculture sector in Ambedkar Nagar district.

मुख्य शब्द : अर्थव्यवस्था, भौगोलिक कारक, विपणन, व्यवस्था, परम्परागत, आजीविका ।
Economy, Geographical Factors, Marketing, Systems, Traditional, Livelihoods.

प्रस्तावना

अम्बेडकर नगर ग्रामीण जनसंख्या की बहुलता वाला क्षेत्र है। यहाँ लगभग 1749 गाँव है। जिससे जिले की 75 जनसंख्या गाँव में निवास करती है। जनसंख्या का इतना बड़ा भाग मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर करता है। परन्तु भूमि और श्रम की उपलब्धता होती हुए भी जिलें में कृषि का समुचित विकास नहीं हो पाया है। कृषकों की परम्परावादी सोंच, कृषि का पुरातन तकनीकि, विमुद्रीकरण का आभाव, प्रभावी नीतियों का अभाव आदि कई ऐसी समस्याएँ है जो कृषि के मार्ग को अवरूद्ध किये हुए है। इसलिए आवश्यक है कि कृषि विकास की विभिन्न समस्याओं को पहचान कर उसका समाधान किया जाए जिससे यह प्रदेश विकास दर बढाने का मूल मंत्र कृषि ही है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र अम्बेडकर नगर जनपद में कृषि विकास के मार्ग में उपस्थित विभिन्न समस्याओं की पहचान करना। कृषि विकास की विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना।

साहित्यवलोकन

किसी भी क्षेत्र में पाये जाने वाली भूमि संसाधन का उपयोग वहां की जनसंख्या के विकास पर निर्भर करता है। जनसंख्या की कार्य कुशलता की कृषि विकास को निर्धारित करती है। अध्ययन क्षेत्र अम्बेडकर नगर जनपद में कृषि भूमि उपयोग जनसंख्या की वृद्धि पर निर्भर करता है। जनसंख्या ही संसाधनों का उपयोग एंव नवाचार के साधनों के द्वारा कृषि विकास का मार्ग सम्भव हो सकता है। ग्रामों की सतत् उन्नति को जिसमें हर रूपों में किसानों एंव ग्राम वासियों के जीवन स्तर की उच्चता और समृद्धि सुनिश्चित हो भारत के विकास का पैमाना घोषित किया है। कृषि विकास में उन्नति तकनीकी का सहारा लेना परम आवश्यक हो गया है। बढ़ती जनसंख्या का भरण पोषण तभी सम्भव हो सकता है।

परिकल्पना

संरक्षण कृषि वह पद्धति है, जिसमें कृषिगत लागत को कम रखते हुए अत्यधिक लाभ व टिकाऊ उत्पादकता लाई जा सकती है। साथ ही प्राकृतिक संसाधनों जैसे मृदा, जल, वातावरण व जैविक कारको में सन्तुलित वृद्धि होती है। इसमें कृषि क्रियाओं उदाहरणार्थ शून्यकर्षण/अति न्यूनकर्षण () के साथ कृषि रसायनों एंव अकार्बनिक व कार्बनिक स्रेतों का संतुलित व समुचित प्रयोग होता है। ताकि कृषि की विभिन्न जैव–क्रियाओं पर विपरीत प्रभाव न हो। संरक्षित खेती में न्यूनतम जुताई से फसल अवशेष मृदा की सतह पर बने रहते है। इससे मृदाक्षरण बहुत कम हो जाता है। सामान्यतः 30 प्रतिशत तक फसल अवशेषों द्वारा मृदा का ढका रहना अति आवश्यक है। संरक्षित खेती में फसल विविधीकरण एंव फसल चक्र अपनाना अति आवश्यक है। सामान्यतः किसान एक ही प्रकार की फसल चक्र कई वर्षो तक अपनाते है। जैसे धान–गेंहू फसल प्रणाली वर्षों से किसान एक ही खेत में लगा रहे है। जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति पर सीधा असर पड़ता है। फसल विविधीकरण मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखता है तथा फसल सम्बन्धित कीटों एंव रोग व्याधि को भी कम करता है।

आकड़ो का स्रोत एंव विधितन्त्र

प्रस्तुत अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक आकड़ें प्रायः सर्वेक्षण पर आधारित होते है। इन ऑकड़ों का एकत्रीकरण कृषकों से व्यक्तिगत पूछ–ताछ प्रक्रिया के द्वारा किया गया है। इसी प्रकार द्वितीयक ऑकड़े विकास खण्ड, तहसील, जनपद एंव बोर्ड ऑफ रेवेन्यू लखनऊ आदि कार्यलयों से प्रकाशित एंव अप्रकाशित दोनों रूपों से लिया गया है। तदोपरान्त समस्याओं के समाधान हेतु उपयुक्त सुझाव भी प्रस्तुत किये गए है।

अध्ययन क्षेत्र

अम्बेडकर नगर उत्तर प्रदेश के नये जनपदों में से एक है जिसकी स्थापना 1995 में हुई थी । इससे पहले फैजाबाद जनपद कहा जाता था जो जिसमें अयोध्या नगर स्थित था जो भगवान श्री राम चन्द्र जी का जन्म स्थान है आदिकवि ने ''वि तमसा तमसा सरयूतटा '' कहते हुए मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम के विजयोत्सव का सुन्दर चित्रण खीचा है। पवित्र सलिला सरयू और तमसा की कल–कल करती जल लहरों से अभिसिंचत भूखण्ड पर आबाद अम्बेडकर नगर जनपद कई दृष्टिकोण से अपनी खास पहचान रखता है। जनपद के अस्तित्व में आने के पूर्व इस भू–भाग ने तमाम उतार चढाव देखें है।

29 सितम्बर 1995 को तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारा शिवबाबा धार्मिक स्थल के मैदान में सृजन की घोषणा के साथ फैजाबाद से विभक्त होकर अस्तित्व में आया , अम्बेडकर नगर जनपद का मुख्यालय अकबरपुर है। यह नगर समुद्र तल से 133 मी. (436 फिट) की ऊंचाई पर तथा 26.43 1/2 अंश उत्तरी अक्षांश और 82.54 पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। 5 तहसीलों और 10 ब्लाकों में विभक्त अम्बेडकर नगर जनपद का कुल क्षेत्रफल 2350 वर्ग किमी. है। जहाँ 2011 की जनसंख्या के अनुसार 2397888 लोग निवास हरते है। जिनकी संख्या बढकर 25 लाख के आसपास हो चुकी है। जिले में 1750 राजस्व गाँव है। जिन्हें मिलाकर कुल 930 ग्राम पंचयाते 3 नगर पालिका व 2 नगर पंचायते गठित है। जिले के उत्तरी सिरे पर घाघरा / सरयू नदी का प्रवाह हैं। जिले का सम्पूर्ण भाग लगभग समतल हो चुका है। जो कि इस जिले में कृषि प्रधान क्षेत्र बनने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

विष्लेशण एंव व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र अम्बेडकर नगर जनपद का कुल क्षेत्रफल 362310 हेक्टेयर है। जिसके लगभग 60 % भाग पद कृषि कार्य की जाती है, जिसमें जिला की लगभग 65 % जनसंख्या संलग्न है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कृषि यहाँ का मुख्य व्यवसाय है तथा जिले

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-2* October- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। जिले में 10 प्रखण्ड है जिसमें से प्रत्येक प्रखण्ड के एक बड़े हिस्से पर कृषि का समुचित विकास नही हो पाया है। कई ऐसे कारण जो क्षेत्र में कृषि विकास में अवरोध उत्पन्न कर रहे है। ये कारण अग्रलिखित है –

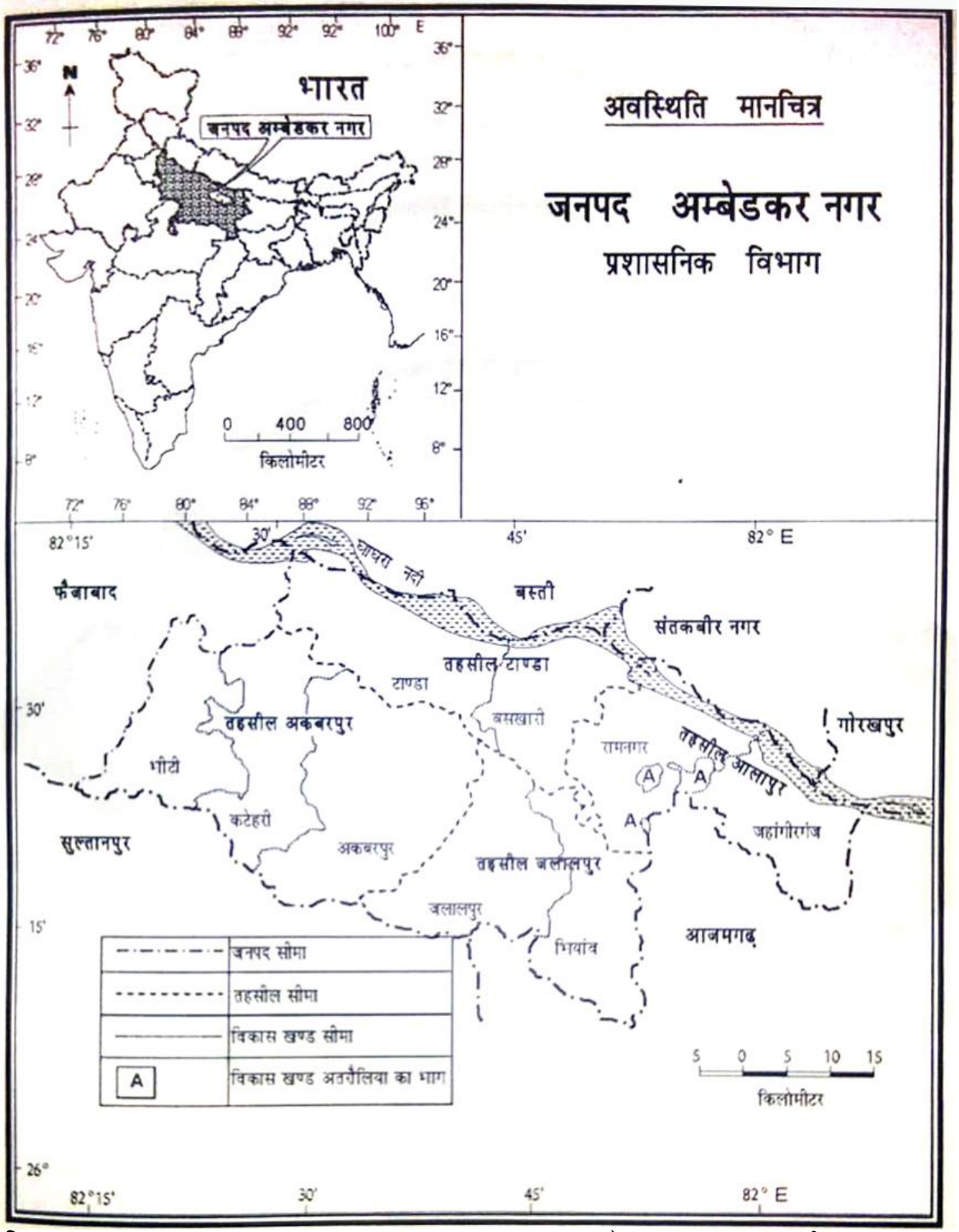

भूमि का बदलता स्वरूप

अम्बेडकर नगर जनपद की कुल जनसंख्या 2001में 1794972 थी जो 2011 में बढकर 2110858 हो

गई है। 2021 में भी जनसंख्या बढोत्तरी की भी सम्भावना है। लगातार जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि भूमि पर जनसंख्या का भार निरन्तर बढता जा रहा है कृषि भूमि धीरे धीरे आवासीय क्षेत्र में परिवर्तित हो रहे है 2011 में जहाँ कृषि कार्यों में लगभग 70 % भाग पर कृषि की जाती थी वही 2011 में कृषि भूमि 65 % रह गई है 2021 में कृषि भूमि में 60 % भूमि का अनुमान है क्योंकि सडको के विकास में एँव पोटरी फार्म, मतस्य पालन जैसे कार्यो में कृषि भूमि का अवशोषण किया है। जिससे कृषि भूमि में कमी पायी जा रही है

पुरातन परामपरागत विधियों का प्रयोग

आज भी परम्परागत कृषि प्रणाली के अन्तर्गत कुछ विशेष परिवर्तन नही देखा गया है वही पुरानी फसल प्रणाली जो एक फसल प्रणाली को प्राथमिकता दी जा रही है। जिसके कारण कुल उत्पादन काफी कम होता है तथा किसानो को उचित लाभ नही मिल पाता है। जनपद में बढती जनसंख्या को देखतें हुए नई फसल प्रणाली को अपना कृषि उत्पादन काफी बढाया जा सकता है। जिससे बढती जनसंख्या का भरण–पोषण हो सके ।

किसानों की भव्यवादी सोच

अम्बेडकर नगर जनपद में किसानों के उत्पादन संबंधी पर्याप्त ज्ञान और अनुभव की भारी कमी है। वे आज भी कृषि को व्यवसाय के रूप में नही बल्कि जीवन यापन के रूप में अपनायें हुए है। अक्सर शीत लहर, पाला, वर्षा, आँधी आदि के कारण फसले नष्ट हो जाती है। जिसमें अच्छा उत्पादन सँभव नही हो पाता और न ही किसानों कों समुचित लाभ की प्रप्ति हो पाती है।

सिंचाई व्यवस्था

अम्बेडकर नगर में सिंचाई व्यवस्था पर्याप्त साधन नहरे, नलकूप होने के बावजूद जिसमें कृषि भूमि 362310 हेक्टेयर है। जिसमें मात्र 237190 हेक्टेयर भूमि सिंचित है। (5) खाद बीज का दुरूपयोग – खाद एंव बीज के दुरूपयोग से अध्ययन क्षेत्र में बिना मिट्टी की गुणवत्ता कम हो जाती है। तथा उत्पादन क्षमता कम होने लगती है। पर्यावरण भी प्रदूषित होता जा रहा है।

कृषि ऋण विपणन व्यवस्था

शोध क्षेत्र में यह पाया गया है कि यहाँ के किसानों की आर्थिक स्थिति काफी दयनीय है। वे अधिकतम कृषि उत्पादन के लिए बीज, उर्वरक, कीटनाशक, सिंचाई सुविधा, पशुओं , विभिन्न प्रकार के कृषि यंत्रों की सुविधा उपलब्ध कराने में असमर्थ है और इन सबके आभाव में अच्छे कृषि उत्पादन की कल्पना नही की जा सकती है।

विक्रय व्यवस्था

अम्बेडकर नगर जनपद में किसानों की एक प्रमुख समस्या विक्रय व्यवस्था की भी है। विभिन्न प्रखण्डों के किसानों को उत्पादन का बेहतर मूल्य प्राप्त करने के लिए जिला मुख्यालय पर आना पड़ता है। और अगर वो अपना माल अपने क्षेत्र के साहूकार को बेचते है, तो उन्हें फसल के अनुपात में उचित लाभ प्राप्त नही होता है।

आधुनिक कृषि यंत्रो का आभाव

अध्ययन क्षेत्र में अभी भी कृषि परम्परागत ढ़ंग से की जाती है। एक ही फसल प्रणाली विधि द्वारा की जाती है। आधुनिक कृषि यंत्रो का प्रयोग विधि की जानकारी के अभाव में सही ढंग से उपयोग नही कर पाते है। अध्ययन क्षेत्र में छोटे किसानों की खेत का आकार छोटा होने के कारण नये कृषि यंत्र उपयोग में नहीं लाये जा सकते है। जिसके कारण यहा प्रति हेक्टेयर उत्पादन अपेक्षा कृषि कम होता है।

बाढ़

अम्बेडकर नगर जनपद में बाढ़ एक ऐसी प्राकृतिक आपदा है। जिसके कारण प्रायः यहाँ की कृषि और कृषक दोनों बुरी तरह से प्रभावित होते है। घाघरा नदी एंव तमसा नदी के छिछला होना, धाराओं के मार्ग परिवर्तन, बरसाती जल का नदियों में भर जाने के कारण जल स्तर में वृद्धि , प0 भाग ऊँचाई की दृष्टि से ऊंचा पाया जाना क्योंकि पूरब की तरफ का ढाल पाया जाना । जिससे घाघरा के जल स्तर के फैलाव से तराई भागों बाढ़ की विकराल स्थिति का बन जाना पाया जाता है। 2019–20 में आयें बाढ़ से लगभग 70 हेक्टेयर क्षेत्र के 1312 जनसंख्या प्रभावित हुई, 70 हेक्टेयर कृषि भूमि जलमग्न हो गई, जिससे लगभग 336000 रू0 के फसलो का नुकसान हुआ था।

तालिका – 1 : भूमि के आधार पर फसल क्षति का विवरण प्रखण्ड स्तर पर

क्र0 स0	प्रखण्ड का नाम	प्रभावित कृषि क्षेत्र (हे0 में)	कुल राशि (रू0 में)
1.	टाण्डा	18	86400
2.	बसखारी	17	81600
3.	रामनगर	19	91200
4.	जहाँगीरगंज	16	76800
	योग	70	336000

इन सबके अतिरिक्त भूमि का उप विभाजन तथा उपखण्डन कृषि साख समस्याओं की कमी कृषि रोग आदि भी कुछ ऐसी समस्याएँ है। जो शोध क्षेत्र के कृषि को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है। अतः आवश्यक है कि इन समस्याओं का उचित समाधान प्रस्तुत कर उसका क्रियान्वयन किया जाय, जिससे अम्बेडकर नगर जिले के कृषि और कृषक दोनो को उन्नत बनाकर क्षेत्र को विकास के मार्ग की ओर अग्रसर किया जा सके। कुछ सुझाव अग्रलिखित है –

1. प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में कृषि को विकसित करने के लिए आवश्यक है कि इस पर जनसंख्या के दबाव को कम किया जाए लोगों को जागरूक कर जनसंख्या के तीव्र वृद्धि को कम किया जाना चाहिए, जिसमें उपजाऊ कृषि भूभाग पर आवासीय क्षेत्र के विस्तार को रोका जा सकें।
2. अध्ययन क्षेत्र में एक फसली कृषि के स्थान पर बहुफसली कृषि को उन्नत किया जाना चाहिए। फसलों के उत्पादन के साथ – साथ व्यवसायिक फसलों की खेती, पशुपालन, मुर्गी फार्म, मछली

पालन, डेरी उद्योग, सब्जियों की खेती को प्रोत्साहन किया जाना चाहिए।

3. कृषि को उन्नत बनाने के लिए आवश्यक है कि यहाँ के किसानों को शिक्षित किया जाए। जिससे कि कृषि को जीवन यापन के लिए नहीं बल्कि व्यवसाय के रूप में स्वीकार कर सके। प्राकृतिक संकटो का सामना करने के लिए उन्हें वैज्ञानिक पद्धतियों से अवगत कराया जाना चाहिए ।
4. विभिन्न पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत हमारे देश में सिचाई व्यवस्था का काफी विकास किया गया है। लेकिन हमारा अध्ययन क्षेत्र अभी भी इससें अछूता है। इसलिए आवश्यक है कि नहरो, नलकूपों, आदि का विकास कर असिंचित क्षेत्र में भी जल की पूर्ति की जाए ।
5. सरकार द्वारा किसानों को उचित मूल्य पर उन्नत खाद, बीज, कीटनाशक आदि उपलब्ध करायें जाने चाहिए। पशुओं के मल–मूत्र को जैविक खाद के रूप में प्रयुक्त किया जाना चाहिए तथा कम्पोस्ट और बेकार वस्तुओं का भी उपयोग कर भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाना चाहिए।
6. किसानों को सस्ते ब्याज दर पर कृषि ऋण मुहैया कराया जाना चाहिए, जिससे वो कृषि उत्पादन के लिए अच्छे बीज, उर्वरक, कीटनाशकों को खरीद कर उसका प्रयोग कर सकें।
7. फसलों को विक्रय के लिए कारगर व्यवस्था की जानी चाहिए। फसल बुआई के पूर्व की उस मूल्य की सरकार द्वारा घोषणा कर दी जानी चाहिए, जिस पर वह किसानों से फसल को खरीदेगा।
8. किसानों को आधुनिक यंत्रो की जानकारी प्रदान कर सब्सिडी पर ट्रैक्टर, पंप, हार्वेस्ट, थ्रेसर, बुआई, रोटावेटर, कटाई आदि के यंत्र को उपलब्ध कराना चाहिए, जिससे वो परम्परावादी पद्धति को त्याग कर उन्नत कृषि के गुणों को अपना सके और बेहतर से बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सके।
9. अम्बेडकर नगर में कृषि को बाढ़ से सर्वाधिक नुकसान होता है। इससे बचने के लिए निम्न उपाय प्रयोग में लाया जाना चाहिए।
   i. घाघरा नदी के छिछले तल को गहरा कर नदी के जल ग्रहण क्षमता को बढ़ाया जाए ।
   ii. तटबँधों को ऊँचा एंव मजबूत बनाया जाए।
   iii. तटीय क्षेत्रों को निर्माण कार्य से मुक्त रखा जाए।
   iv. आन्तरिक भाग से बाढ़ क`जल को निकालने के लिए उचित प्रबन्धन किया जाए।
   v. घाघरा नदी के जल को नहरों के माध्यम से अन्य क्षेत्र में सिंचाई के साधनों के रूप में प्रयोग किया जाए जिससे नदियों के जल स्तर में बाढ़ की स्थिति न पैदा हो सकें।
10. निरन्तर हो रहे भूमि विभाजन को रोकने के लिए भूमि सुधार कार्यक्रमों का प्रभावी ढ़ँग से संचालन किया जाना चाहिए।
11. वर्तमान नियोक्ति अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत कृषि को एक प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र घोषित किया जा चुका है। बैंकिग व्यवस्था अपने कुल ऋणों 56 % इन प्राथमिक क्षेत्रों को देने के लिए बाध्य है। इसमें कृषि का प्रतिशत 21 % है। कृषकों को इन सबकी समुचित जानकारी प्रदान की जानी चाहिए, जिससे वो इसका अधिक से अधिक लाभ उठा सकें।

निष्कर्ष एंव सुझाव

ऑकड़ों के सांख्यिकीय विवेचन व मानचित्र प्रदर्शन के सम्मिलित विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामनें आता है कि जनपद अम्बेडकर नगर में कृषि विकास की आपार सम्भावनाएं है। जनपद में बढ़ती जनसंख्या के दबाव को देखते हुए कृषि क्षेत्र में विकास की आवश्यकता है। क्योंकि कृषि क्षेत्र सिकुड़ते चले जा रहे है। अतः नवीन तकनीकि एंव उन्नतशील बीजों, जैविक उर्वरकों का प्रयोग करते हुए समपोषणीय विकास पर जोर देने की आवश्यकता है। जिससे आने वालें समय में जनसंख्या के बढ़ते दबाव से निजात मिल सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *जिला कृषि विभाग, अम्बेडकर*
2. *आपदा प्रबन्धन विभाग U.P.*
3. *सांख्यकी विभाग U.P.*
4. *व्यक्तिगत क्षेत्र सर्वेक्षण*
5. *Chauhan D.C. (1966): Studies in Utilization Of Agricultural land. Agrawal 2-co. Agra. pp.22-24.*
6. *M. Islam (2015) : ''भूमि उपयोग प्रतिरूप एंव संघृत कृषि भूमि विकास मऊ जनपद का भौगोलिक अध्ययन''*
7. *कुमार विनोद (2013) '' अकबरपुर विकास खण्ड (जनपद अम्बेडकर नगर) के परिवर्तित भूमि उपयोग का एक भौगोलिक अध्ययन''*
8. *मौर्य राम कुमार (2012) ''फैजाबाद जनपद (उ0 प्र0) में कृषि एंव ग्रामीण विकास पर नवीनीकरण का प्रभाव*
9. *गौतम अलका – कृषि भूगोल, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद (2009)*
10. *Tiwari R. C. & Tripathi S – Agricultural Development Retrospects a case of Gorakhpur District National Geographet 1993*
11. *शिवशंकर (2018) ''कृषि भूमि उपयोग का परिवर्तन और सामाजिक आर्थिक विकास अम्बेडकर नगर ''*